सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय

कोर समूह बैठक, वैकल्पिक शिक्षा केंद्र

दिनांक 11-13 जनवरी 2016, बारला अकादमिक परिसर

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के वैकल्पिक शिक्षा केंद्र के कोर समूह की तृतीय बैठक में **सीखने की प्रक्रिया की समझ को विस्तार** और **लर्निंग स्पेस डिजाइन** का एजेंड़ा था। बैठक में निम्न शामिल हुए।

कोर समूह: श्री राजेन्द्र रैना, श्री जिन्नन केबी, श्री पवन गुप्ता, श्री नरेंद्र एस, श्री शशिभूषण सिंह, श्री राजेश गुप्ता
विशेष आमंत्रित: श्री अजय कुमार, श्री सौम्यजीत, श्रीमति कल्पिता पॉल, श्रीमति रितु शर्मा
सांची विवि: डॉ नवीन कुमार मेहता, डॉ अखिलेश सिंह, डॉ देवेन्द्र वर्मा, डॉ देवेन्द्र सिंह, डॉ राहुल सिद्धार्थ, डॉ विशव बंधु, डॉ उपेन्द्र बाबू खत्री, डॉ नवीन दीक्षित, डॉ संतोष प्रियदर्शी, श्री रमेश रोहित, सुश्री प्राची अग्रवाल, श्री प्रभाकर पांडेय, श्री विजय दुबे, श्री अमित गौतम

सीखने की प्रक्रिया की समझ का बिंदु, पिछले कोर समूह से बनी **समझ को और विस्तार** देते हुए बारीकी से परीक्षण के लिए था जबकि सीखने की जगह या लर्निंग स्पेस डिजाइन का उद्देश्य भी सीखने में उपयोगी और सहायक परिस्थितियों एवं विधियों से युक्त स्थान के **कुछ अति-आवश्यक बिंदुओं** तक पहुंचना था।

11 जनवरी 2016

बैठक के पहले दिन नए शामिल हुए लोगों के परिचय और पिछली बैठक के संक्षिप्त पुनरावलोकन के उपरांत लर्निंग फ्लावर के संबंध में सभी प्रतिनिधियों ने अपनी समझ के अनुसार परिप्रेक्ष्य और दृष्टिकोण सामने रखा। सीखने की प्रक्रिया में **भाषा को आवश्यक** मानते हुए उसे एक कारक के रुप में जोड़ा गया। कुछ सहभागियों ने सीखने में **प्रयोग की उपयोगिता** बताई तो कुछ ने सीखने को मूल मानते हुए **परिस्थितियों एवं व्यक्तियों से सीखने** का सूत्र दिया।

भारतीय भाषाओं में दूसरी भाषाओं के अर्थ आरोपित हो जाने की ओर ध्यान दिलाते हुए **शब्द की बजाय अर्थ** रुप में समझने या **अर्थ से शब्द की ओर जाने** की बात कही गई। उदाहरण मिला कि हम **listening** की बजाय **hearing** करते रहते हैं जबकि ज़रुरत **गहराई से अवलोकन** की है। **ध्यानपूर्वक** और **बिना पूर्वाग्रह** के सुनने का सूत्र भी मिला।

दूसरे सत्र में कोर समूह सदस्यों ने लर्निंग फ्लावर को ही और गहराई से समझने और आपसी समझ बनाने का प्रयास किया जबकि अन्य सहभागियों ने **सफलता के सूत्र और उसके अंतर्निहित तत्वों** को अपनी समझ के मुताबिक वर्गीकृत किया। वैकल्पिक शिक्षा केंद्र के उद्देश्य को सांची विवि की ओर से **सीखने को विस्तृत परिप्रेक्ष्य में समझने**, विचार-मंथन से बनी **समझ का प्रस्ताव** बनाने, बनी हुई समझ को **प्रचार** के माध्यम से समझाने और प्रस्ताव को **प्रयोग** के जरिये वास्तविक धरातल पर उतारकर उसके **प्रभाव का अध्ययन** करने के तौर पर रखा गया। केंद्र की प्राथमिकताओं पर बहस के दौरान **कैसे** से **पहले क्या** और **क्यों** को पूरी तरह समझने की बात रखी गई। ये चिंता भी सामने आई कि **कैसे को मानकीकृत करते ही प्रशिक्षण** शुरु हो जाता है जो कहीं ना कहीं मूल समझ को **संकुचित** करता है।

कोर समूह के विस्तार के साथ शोध एवं दस्तावेजीकरण, **सही माहौल** और इस प्रक्रिया में जुड़ने को तैयार लोगों के लिए अवसर मुहैया कराने पर भी बात हुई। सीखने, समझने की प्रक्रिया में **विश्वास और ध्यान के साथ प्रेरित करने वाली स्थिति-परिस्थिति** के बिंदु सामने आए। **स्थानीय(परंपरागत) ज्ञान** जो कि **संबंधों और सहजता** से संचालित होता था उसकी प्रक्रिया देखने की कोशिश की गई। समझ आया कि समुदाय आधारित ज्ञान परंपरा में **खेल** भी **बिना किसी प्रतियोगिता** के थे और उनका स्वरुप आनंद ही होता था।

12 जनवरी 2016

दूसरे दिन सीखने की प्रक्रिया को समझने की कोशिश में **पिंड के योगदान** पर बात हुई। प्रक्रिया को समझने के दौरान किसी घटना के **संपर्क में आने, कहानी, सत्संग और संबोधन** को भी इसका हिस्सा माना गया। **प्रक्रियाओं के मानकीकरण** के चलते **बात(संवाद) के तरीके खत्म** होने की चिंता भी सामने आई। सीखने में **लोक व्यवहार** को अहम किरदार मानते हुए अफसोस जताया गया कि बच्चे के सीखने से जुड़े पारंपरिक ज्ञान के बिंदु शायद हमने खो दिए है।

सवाल उठा कि हमनें **आमजन के पास संरक्षित** रही **ज्ञान परंपरा को विशेष** बना दिया जिससे वो गुम हो रही है। ये चिंता भी जाहिर हुई कि व्यक्ति ने इन्द्रीय सेंसिग क्षमता को कुंद कर लिया है और दिमाग को सेंसिग का काम सौंप दिया है। विचार पर राय **(Opinion)** बनाने की बजाय जांचने **(Enquiry)** की बात हुई।

दूसरे सत्र में लर्निंग स्पेस डिजाइन करने पर सभी सदस्यों को विभिन्न समूहों में बांटकर विचार किया गया। बच्चे को **स्वतंत्रता देने**, उसे **सीखने का माहौल** देने और **मौलिक नकल** करने को मूल व्यक्तित्व के लिए बेहतर माना गया। Facilitator (सहायक/सहजकर्ता) को लर्निंग स्पेस का सबसे **अहम किरदार** मानते हुए उसमें **संवेदनशीलता, खुलापन और सीखने** की क्षमता के साथ उस जगह के प्रति समर्पण (Committed/Dedicated) जैसे गुण रेखांकित हुए। एकांत (Silence) को जगह देने और खेती को भी ज़रुरी माना गया। एक समूह ने **जीविकोपार्जन(Survival)**, **कला-कौशल(Industrial Education)** और **खुद को खोजने (Self Discovery)** की शिक्षा देने वाले केंद्र के रुप में लर्निंग स्पेस की परिकल्पना की।

13 जनवरी 2016

तीसरे दिन सीखने की समझ के **लर्निंग फ्लावर को बारीकी से परीक्षण** का कार्य नियत था किंतु कोर समूह सदस्यों ने **अंत: निरीक्षण** को प्राथमिकता दी। अपनी भूमिका की समीक्षा करते हुए कोर समूह ने उद्देश्यों पर पुनर्विचार करते हुए अधिकार और जिम्मेदारियों को स्पष्टता से परिभाषित करने की बात की। कोर समूह के सदस्यों ने सीखने की **समझ को बेहतर** बनाए बिना सीखने की **प्रक्रिया पर किसी तरह के क्रियान्वयन** से बचने की सलाह दी।

बैठक में सांची विवि एवं कोर समूह के **कार्य-संबंध** पर भी विचार हुआ जिसमें कोर समूह की सलाहकारी भूमिका को विस्तार देकर क्रियान्वयन में भी संभावित सहयोग पर बात हुई। सुझाव आए कि **शिक्षा क्षेत्र के मुद्दों** के साथ स्कूल से इतर सीखने की जगह पर जानने के उद्देश्य से काम हो। वैकल्पिक शिक्षा क्षेत्र पर **शोध**, **लोक ज्ञान** या sense based knowledge को संरक्षित करने, एक नैसर्गिक वातावरण में कैसे बच्चा सीखता है इसका अध्ययन करने और दस्तावेजीकरण जैसे कार्यों की सूची सामने आई। ये भी तय हुआ कि कोर समूह के सभी सदस्य **7 दिनों में अपनी समीक्षा** और **कार्य के दायरे** पर सुझाव भेजेंगे और सामूहिक आधार पर **आगे की राह** तय की जाएगी।

निष्कर्ष

कोर समूह की तीसरी बैठक में समीक्षा के साथ वैकल्पिक शिक्षा केंद्र में समूह ने अपनी **उपयोगिता, कार्य करने की सीमाएं और अधिकारों** पर विस्तृत बात की। ये विचार भी आया कि बैठक का कोई एजेंडा नहीं होना चाहिए ताकि मुक्त संवाद हो सके। कोर समूह में कईयों का मत था कि **लर्निंग स्पेस पर कोई काम नहीं** होना चाहिए क्योंकि **पूरा वातावरण ही लर्निंग स्पेस** है, हालांकि कई सदस्यों ने सीमित वैकल्पिक लर्निंग परिसरों को अच्छे उदाहरण के बतौर प्रस्तुत किया। ये भी पाया गया कि आधुनिक युग की लर्निंग स्पेस में पारंपरिक चीज़ें लगभग समाप्ति की ओर है और आधुनिक बाज़ारी व्यवस्था का नैसर्गिक लर्निंग में बहुत व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। कोर समूह के कई सदस्यों ने वैकल्पिक शिक्षा की गतिविधियों से नैसर्गिक रुप से जुड़ रहे प्राध्यापकों के शामिल होने में असहजता भी महसूस की।

कोर समूह में शोध एवं दस्तावेजीकरण को सबसे ज्यादा अहमियत देते हुए निम्न बिंदु तय हुए।

- **शोध एवं दस्तावेजीकरण- बहस और मौजूदा प्रयासों पर गंभीर शोध**
- **भाषा- भाषा की भूमिका पर गहरी समझ एवं शोध (Deeper Enquiry)**
- **बच्चा प्राकृतिक रुप से कैसे सीखता है? (Formation of Child natural way)**
- **पूर्वानुमान और बोध कैसे होता है? (How assumptions & perception form?)**
- **मौलिक ज्ञान (Indigenous knowledge system/Sense based learning)**
- **स्थानीय/क्षेत्र विशेष/परिस्थिति से सीखना (Landscape based Learning, संपूर्ण संस्कृति, कहावतें, लोकोक्तियां)**

शोध एवं दस्तावेजीकरण के दायरे में तय हुए बिंदुओं पर कोर समूह से तत्काल कोई ठोस प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुआ हालांकि कोर समूह ने उपरोक्त **बिंदुओं के उपबिंदुओं को चिन्हित कर भेजने का आश्वासन** दिया है। प्राप्त होने वाले उप-बिंदुओं के आधार पर **दस्तावेजीकरण और शोध** की **प्राथमिकता** और **बिंदु** बारीकी से तय किए जाएंगे। सार रुप में लर्निंग की बाह्य और आतंरिक प्रक्रिया को पूर्ण रुप से समझने का संकल्प लेते हुए पर्याप्त समझ के उपरांत ही प्रयोग के क्षेत्र में जाने का विचार उभरकर आया।

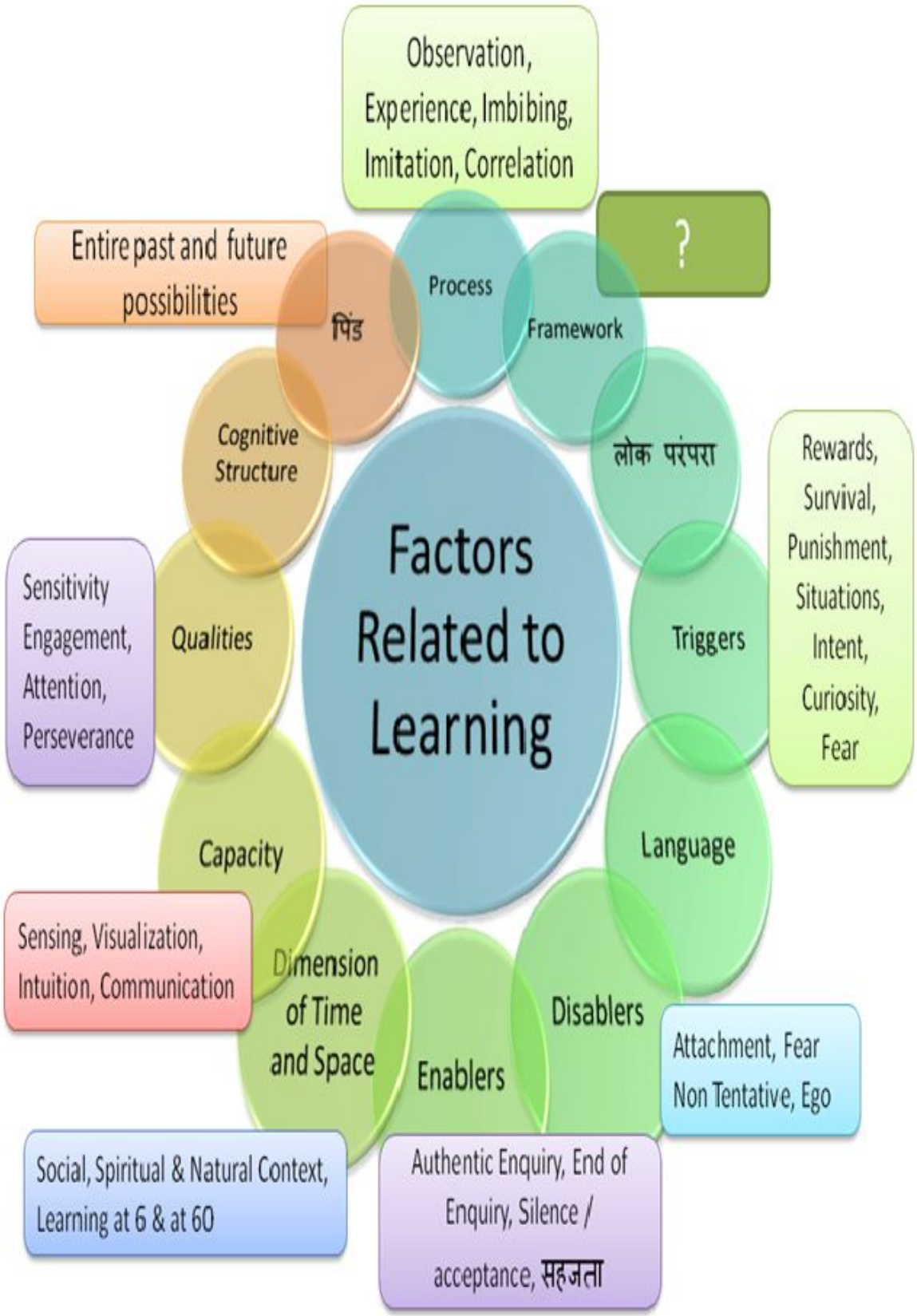
Factors Related to Learning
Observation, Experience, Imbibing, Imitation, Correlation
?
Process
Framework
Entire past and future possibilities
पिंड
Cognitive Structure
लोक परंपरा
Rewards, Survival, Punishment, Situations, Intent, Curiosity, Fear
Triggers
Sensitivity Engagement, Attention, Perseverance
Qualities
Capacity
Language
Sensing, Visualization, Intuition, Communication
Dimension of Time and Space
Disablers
Attachment, Fear Non Tentative, Ego
Enablers
Social, Spiritual & Natural Context, Learning at 6 & at 60
Authentic Enquiry, End of Enquiry, Silence / acceptance, सहजता